भारतीय संस्कृति और नारी

श्री धर्मेन्द्र सरोज
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
श्री महंथ रामाश्रय दास पी. जी. कॉलेज,
भुइकुड़ा, गाज़ीपुर

हमारी भारतीय संस्कृति विश्व की बहुत ही प्राचीन संस्कृति है, जिसमें नैतिक मूल्यों और परंपराओं का एक समृद्ध मिश्रण है। हमारी सस्कति में नारी को पूजनीय बताया गया है- 'यत्र नार्यस्ते पूज्यंते रमते तत्र देवता परंतु नारी का स्थान विभिन्न कार्लो में बदलता रहा है।

पुराने समय में विवाह को एक पवित्र धार्मिक बंधन समझा जाता था। नारी पति को भगवान मानकर उसकी यातनाएं भी सहकर पतिपरायण बनी रहती थी। स्वतंत्रता के पश्चात पति-पत्नी के रिश्तों में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है। आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत व कानूनी दृष्टि से अधिक सुरक्षित और आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र है। नारी की अपनी स्वतंत्रता ने परंपरागत विवाह संस्था के सामने प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया है। पुरुष और नारी के लिए अब सांस्कृतिक मूल्य समाप्त हो रहे हैं।

नारी की अस्मिता और उसका अहम पुरुष की अपेक्षा गौड़ जीवन उसको मंजूर नहीं है। दोनों की मनःस्थितियों में परिवर्तन हुआ है। अतः दोनों समाज और परिवेश के अनुसार जीवन जीने की दिशा में अग्रसर है। आधुनिक विकास के दौर में दोनों स्वतंत्र रूप से जीवन जी रहे हैं, लेकिन आज भी यदा कदा दिख जाता है कि नारी संस्कार बस समर्पण की मूर्ति बन जाती है। वह अपने विभिन्न प्रकार के छोटे-छोटे सुखों को ही साध्य मानकर जीवन व्यतीत करती है।

जब पुरुष अपने विचार नारी पर थोपने लगता है तो वहीं से संबंधों में तनाव शुरू हो जाता है और परिणामस्वरुप विवाह विच्छेद भी हो जाता है।

आज के बदलते परिवेश में विवाह से जुडी हुई प्राचीन परम्पराएं नष्ट होती जा रही हैं, क्योंकि आज की नारी में आगे बढ़ने की छटपटाहट है। वह जीवन और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में कुछ कर गुजरने के लिए अथक प्रयास भी कर रही हैं। जिसके परिणाम स्वरूप आज वह पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर आगे भी बढ़ रही है। आधुनिक नारी पुरुष से कमतर अधिकार कभी भी स्वीकारने को तैयार नहीं है। वह चाहती है कि यदि पुरुष महिला पर अधिकार समझकर उसके लिए गए प्रत्येक निर्णयों में हस्तक्षेप कर सकता है तो वह भी पुरुष द्वारा लिए गए निर्णय में अपनी भूमिका चाहती है। महिलाओं का नौकरीपेशा जीवन उसे पुरुष के सामानांतर श्रेणी में ला दिया है। आर्थिक स्वतंत्रता से उसका अहम प्रभावशाली हुआ है, जिस कारण से वह परिवार और समाज में गौड़ भूमिका स्वीकार करने को बिल्कुल भी तैयार नहीं है।

आधुनिक नारी की मानसिकता बदली हुई है। वह आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर हुई है जिससे वह शिक्षा, राजनीति, व्यापार और विज्ञान जैसे विभिन्न क्षेत्रों में उतर चुकी है तथा अपनी योग्यता भी साबित कर रही हैं। नारियों में यह बदलाव अभी सीमित है, क्योंकि वह आज भी कुछ रुढ़िवादी विचारों के टकराव से घायल होकर पीछे मुड़ जाती हैं। समाज के विकास के लिए उनकी बदलती मानसिकता महत्वपूर्ण है।

***